



66

कैलाशमां वर सखा यद्दी गुरु यगव
गंजी कनक हं वर सखा यद्दी गुरु यगव

गुरु सखे वर सखा यद्दी गुरु यगव
कीजी मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
सै सै सै सै सै सै सै सै सै सै सै सै
गुरु सखा यद्दी गुरु यगव

नायस्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ सूत्रान् ॥ कलसथियके ॥ ॥ थूमि
द्वादसकलसन्ध्यासविधिज्ञा ॥ ॥ थन ॥ मात्रसादसक
इयुजा ॥ ॥

थन ॥ नागार्पणं ॥ धूप ॥ जाय ॥ निराजन ॥ ॥ थन ॥ व
धमान ॥ ॐ नमः ॥ धूलरुकात्रेन नमस्तत्त्वनत्रावनासमयुन

॥ वेत्रावनमेनहनाम्यहंसंरुलवज्रवनून ॥ स्यगवन ॥ सफ
हना ॥ दधिनकयदवनासायकल ॥ वास्यनवनात्रिगात्रा ॥ ना
गायाम ॥ समूदप्रतिवाल्समयसह ॥ याद्यादियूर्यन्यास ॥
ॐ वनूनायवज्रयूयायगिह्र स्वाहा ॥ यथायुक्तयुजा ॥ चित्त
वड ॥ द्वाहास्वान ॥ धूप ॥ ॐ स्वाहा ॥ रुद्र ॥ धरि ॥ वातुसंय ॥ रुता न

नागार्पणं

किंगन ॥ उंजनाधिवतिनागनाशास्वधुविवनादिः वनूनायनकुरुते
१ ॥ थनपूषुध्वान ॥ उंयुध्वनंतायनागनाशान्तरितं वज्रमसं
दिसमाकसत्राचिह्नमद्धानं विरावी ॥ ॥ याद्यादियुध्वन्यास ॥ उं अं
नगायवज्रयुध्वनः यतिरुखाहा ॥ ३ ॥ यं वायुहानयुजा ॥ विः अं अं
॥ अरात्रागिखान ॥ धूपः धूग ॥ रुगः धन ॥ रुना ॥ कत ॥ उं नम

अनंतायवुधादिनावादियंगिरुनाछादित अनंतनागनमकुरुते ॥
२ ॥ थनः दधिनसः ध्वान ॥ उं दधिनदलेयुमनाग ॥ कूं दूं दूं संका
सग्धावस्यनाधिगस्यधंरावत ॥ याद्यादियुध्वन्यास ॥ उं यं यस्मायव
जययुगिरुखाहा ॥ ३ ॥ यं वायुहानयुजा ॥ विः ॥ अं ॥ कत ॥ रु
॥ धूपः सिति ॥ रुग ॥ कति ॥ रुना ॥ कित ॥ उं नम यस्मायव

पुनः यज्ञावादिषु यं च रुनाद्वादितां यमनागतमामिहं । ३
थनः वल्लिमसध्यानं ॥ उं नम यल्लिमवृयं तक्रकाय तक्रवर्णशिव
कुकितासिलविस्वहं तावत् ॥ याद्यादिपूर्यन्मास ॥ उं न तक्रकायवत्
पूर्यः यनिह्मसाहा ॥ ३ ॥ वि तक्रवन्दन ॥ त्रिगहनागवा ॥ धूपः कस्तूर
॥ रुग्णः शिवता ॥ रुनाड ॥ किन ॥ उं नम तक्रकायवर्धायुं यज्ञावादिषु

नच रुनाद्वादितां तक्रकं नमस्कृतं ॥ ४ ॥ थनः उं नमसध्यानं ॥ उं उं
लवासु किनागताताः शिवनवर्णकृगस्तुतां त्रिगहनागवा ॥ याद्यादि
पूर्यन्मास ॥ उं वां वासुकिर्यवत्तूर्यः यनिह्मसाहा ॥ ३ ॥ यं वाप्रहात
यज्ञा ॥ रुग्णवन्दन ॥ अतिस्तन ॥ धूपः कस्तूर ॥ रुग्णः साधन ॥
किन ॥ उं नम वासुकिनागमवर्धायुं यज्ञावादिषु वासुकिनमामिहं

॥ थनः ००० मानसध्यान ॥ ॐ ००० मानसध्यानमहयर्मनागमद्विकनकव
ल्लुतिस्त्रास्त्रिनविराचन ॥ याद्यास्त्रानवाय ॥ ॐ मां माहायुमायव
पूर्यः यतिस्त्राहा ॥ ३ ॥ येवायहात्रयज्ञा ॥ चिः कुं कुम ॥ तद्वासा ॥
धूपः ॥ ग्राधं द ॥ रुग्ः ॥ हायूहाम ॥ रुग्ः ॥ कितन ॥ ॐ नममाहायमा
यवुवांयुयज्ञावादिद्यसकहनास्त्रादिन ॥ माहायर्मनमासिह ॥ ३

॥ थनः ॥ अग्निसध्यान ॥ ॐ अग्निसध्यानमहयर्मनागमद्विकनकव
ल्लुतिस्त्रास्त्रिनविराचन ॥ याद्यादियुपंत्यास ॥ ॐ मां माहायुमायव
पूर्यः यतिस्त्राहा ॥ ३ ॥ येवायहात्रयज्ञा ॥ चिः ॥ त्रकुर्वन्दन ॥ कुतस्त्रा ॥ धूप
नकि ॥ रुग्ः ॥ इइ ॥ रुना ॥ ॐ नमसस्त्रयात्रायववांयज्ञावादिद्य
नुकादसरुनास्त्रादिन ॥ सस्त्रयात्रायनमस्तु ॥ ७ ॥ थनः ॥ नृप ॥

ध्यान ॥ उं नमि त्र्यकुको गकाय नाग राजा धवन वल्किलं बांकु ग
विता वान् ॥ पाद्यादि पूजन्यास ॥ उं कुककु गकाय वज्रयूयः निष्ठ
हा ॥ ३ ॥ ये चोपहारा यज्ञा ॥ वि ॥ ग्राह्य ॥ रुमि च या स्वान् ॥ धूय
अंग ॥ रुग्गु निवा ॥ रुना ॥ किं न ॥ उं नम ककुको गकाय वुवा
ययज्ञां वादि ययं च रुना दितं ॥ ककुको नममिहं ॥ न ॥ थन ॥

वायु च स ध्यान ॥ उं वायु च कुनिक नाग राजा धित ॥ नकु ॥ विचि
वदना ॥ अर्ध चंदा किं न के थवना ता वान् ॥ पाद्यादि पूयः न्यास ॥ उं
कुं कुनिकाय वज्रयूयः यनिष्ठ स्वाहा ॥ ३ ॥ चित ॥ ककुनि ॥ स्वा
सकगां ॥ धूय ॥ गथवन ॥ रुग्गु ॥ रुना ॥ किं न ॥
॥ उं नम कुनी काय वुवा ययज्ञा वादि ययं नवरुना दितं ॥ कुलि

कायनमामिहं ॥ ८ ॥ **थन** नागावनिविय ॥ उं गुतमं कुलं ॥ ००
रुगावादिथ अगन्य ॥ नैत्रिल्य ॥ वायूच ॥ पूर्ववद्विम ॥ उक्त ॥ दधित
मानिक्रुत्र ॥ धुसिक्रुत्र ॥ पूर्वदिपुला ॥ ०० ॥ देवनिगट ॥ शसर्वसा
निक्रुत्र ॥ ह्रैरु ॥ स्वाहा ॥ ॥ समय ॥ मतविय ॥ पुनायाय ॥ नागधूय
थस्य ॥ त्रिचक्रय ॥ अरुतिविय ॥ यत्रिवारपूजा ॥ देवनिवनिधि

य ॥ गगमानस्वानननके ॥ गत्रपूजा ॥ देवना ॥ क्रमायन ॥ थन
पूजाय ॥ ॥ उं वरुनादि अरु कुलनागसुविनागावादिद्यत्रय
लिपून अरु गुवा ॥ रु ॥ २ नागसुविपुन ॥ ह्रैरु ॥ ह्रैरु ॥ स्वाहा ॥
नागमंलुन पूजाविममाक ॥ ॥ ॥

[illegible]

अवः पं काल प्रा दो पात प्रा च न क्र आता व य म म मा थ स
 पु व ना न दु यः डा क्र न म न केः स को नां वा ठ म रु व ॥ स
 रु इ न सां थु व म् क ता क पु स्म ग म मा तः आ रु व ५ न
 थ म म म मी क्र इ साः स्त्रा के इः न सा यं द्रु ग मा व ना म न
 मः स्त्रा म ना इ न सा म सि क ता त म स ड क स न का च न म ग
 ता व सि मि वः थु म स्म त स् के न म त नः के न ड स सा ग

॥ सु. ४ वख

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ० ॥ दद्याद्दिदव मूक्ति
सर्वदा ॥ ० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

२३ हं रागमपाः मानवाश्च संः क्षमन्विष्यः क्षमः ३॥ ति वि प्र म

॥ २३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३३५७॥ वासुदेवाय नमः ॥

ॐ गुरु शिवाय नमः ॥ यमं कृष्णं नमः ॥ गानं नीवन्नावेन सः

[illegible]

सप्त विक्रमा

सुखं सुखं सुखं

किं निदावमापूयन्वाथसुमं॥ ॥ ॐ सिधुसलुगिना
नवकुमालिः वरुणगिरि। हरे ८ स्वाहाः धमत्रा शिवा प्रकृष
मिसाति ८ कः वसु २ ग १० ॥

मिस्त ॥ १८ कः ॥ २५

ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ धन ॥ सनातन ॥ यज्ञ ॥

॥ ॐ स्वरावसुधा ॥ सकृद्विष्णोस्वरावसुधा ॥ ॐ
निर्दिष्टकात्रयलिनन ॥ नानात्रलमयकल ॥ अश्व
कावसुधा ॥ नरक ॥ नद्वलिमिहायत्रि
विस्वककनिका ॥ ॐ कात्रयवसुधि

॥ सनातन ॥

कवसुधा ॥ वसुधावसुधा ॥ सनातन ॥ यज्ञ ॥
यववृधत्रलमयकल ॥ नानात्रलमयकल ॥ अश्व
कावसुधा ॥ नरक ॥ नद्वलिमिहायत्रि
विस्वककनिका ॥ ॐ कात्रयवसुधि

क्रवर्तु चतुर्थास्यासुत्रयायधनं ॥ रगवर्तु क्रगगुर्तु ॥
ग्रावर्तु वाचनविज्ञाया ॥ खरुद्विगमयूखां क्रुर्नर्त्तु नमस्तु
मानिययूत्रताइक्रायाद्याचमनादिकं दत्त्वा ॥ नष्टसमयस
त्ययुधस्य ॥ महात्रागानद्रविरुय ॥ वाधिविनत्रयाम
निरुनचिनयन् ॥ चिह्नवसमयदवना ॥ स्नानदवना

यकिरुनचिनयन् ॥ नतावक्रागुक्रयूषामात्राकं ॥ य
चरुर्वाप्रद्यं क्तासहिर्न ॥ वाप्रमृष्टिनागृहित्वा ॥ उं
सर्वेनथागनमहायाग्राखरुर्ह ॥ ॥ यनः ००० मानस
॥ वक्रथिय ॥ उं वक्रयक्रुर्ह ३ ॥ काय ॥ उं वक्रयक्रुर्ह
१०८ ॥ यूर्ध्वन्यास ॥ उं महाध्वनाचनानमस्वाहा ॥

ॐ सत्त्ववर्जिनमस्तु ॥ ॐ रत्नवर्जिनमस्तु ॥ ॐ धर्मवर्जिनमस्तु ॥ ॐ कर्मवर्जिनमस्तु ॥
॥ यथायुक्तप्रयुक्तानि ॥ ॐ वज्रधर्ममहाध
नु, सत्त्ववर्जिनमस्तु ॥ रत्नवर्जिनमस्तु ॥ धर्मवर्जिनमस्तु ॥ कर्म
वर्जिनमस्तु ॥ ॥ वज्रिः, शृङ्गा, मूषा, त्यादि ॥

●॥ धनः पूर्वम् ॥ वृत्तनधिय ॥ ॐ वृत्तयकृद् ॥ ज्ञाय
॥ ॐ मन्त्रवर्जिह ॥ अकरवन ॥ मन्त्रवाय ॥ ॥ ॐ अर्क
त्याय नमस्त्वाहा ॥ ॐ वृत्तमस्वाय नमस्त्वाहा ॥ ॐ वृत्तत्राज्याय
नमस्त्वाहा ॥ ॐ वृत्तत्रागम्य नमस्त्वाहा ॥ ॐ वृत्तमाध्याय नमस्त्वा
हा ॥ ॥ यं वायुहात्रपूजागुति ॥ ॥ ॐ अर्कस्य वम

हाविलं वज्रसत्त्व नमामिहं ॥ वज्रराजमहात्राग ॥ व
ज्रसूत्रं नमनमा ॥ ॥ वज्रि ॥ अकमूय ॥ ॥ थन ॥
दधिनस ॥ वज्रधिय ॥ उं वज्रयं कुरु ॥ ज्ञाय ॥ उं नलव
जिगुं ॥ अकयन ॥ खानवाय ॥ ॥ उं नलसं रावाय
नमस्वाहा ॥ उं वज्रनलाय नमस्वाहा ॥ उं वज्रने ज्ञाय नम

स्वाहा ॥ उं वज्रकं नवं नमस्वाहा ॥ उं वज्रहासाय नमस्वा
हा ॥ ॥ यं वायुलावृजानुनि ॥ ॥ उं भ्रात्रलसं राव
वृषं ॥ वज्रनलनमामिहं ॥ वज्रने नमो कं नु वज्रहासं नम
मिहं ॥ वज्रि ॥ थन ॥ वज्रिमया न ॥ अं कं यं न ॥ वज्रन
धिय ॥ उं वज्रयं कुरु ॥ ज्ञाय ॥ उं धर्मवज्रिणी ॥ अक

वन ॥ स्नानदीय ॥ ॥ ॐ अमिनारायनमस्वाहा ॥ ॐ वक्र
मन्त्रनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रनित्यनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रहं न
वंनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रतावायनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तान
युक्तानुति ॥ ॥ ॐ अमिनारायनमस्वाहा ॥ वक्रधर्मनमास्वा
हा ॥ वक्रनित्यमस्वाहा ॥ वक्रतावनमाम्हा ॥ ॥ वक्र

श्रुतामूख ॥ ॥ यन ॥ ॐ वक्रयान ॥ वक्रनधिय ॥ ॐ
वक्रयकृत् ॥ काय ॥ कर्मवक्रि ॥ ॥ अकवन ॥
स्नानदीय ॥ अमद्यमिदियनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रकर्मो
यनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रनक्रायनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रयक्राय
नमस्वाहा ॥ ॐ वक्रसंक्षयनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तान

यूजा नृनि ॥ ॥ उं अमाद्यसिद्धि वृत्तं ॥ वज्रकर्मनताम्यहं
॥ वज्रत्रयं वज्रयत्रं वज्रसंधिनताम्यहं ॥ वज्रधाम्नामहं
वाधिसर्वविघ्नविनाशकं ॥ सर्वसिद्धिस्वर्जनताम्यहं ॥
वति ॥ अकात्रमुख ॥ ॥ थन ॥ अग्न्याह ॥ वज्र
थिया ॥ उं वज्रयत्रं ॥ जाय ॥ उं वज्रत्रास्यहं ॥ अकवन

॥ स्वानवाय ॥ ॥ उं वज्रत्रास्यार्थं नमस्वाहा ॥ उं वज्रमात्रा
यनमस्वाहा ॥ उं वज्रगानार्थं नमस्वाहा ॥ उं वज्रनृत्याय
नमस्वाहा ॥ उं वज्रधूम्राय नमस्वाहा ॥ उं वज्रवृक्षाय न
मस्वाहा ॥ उं वज्रगंधर्वाय नमस्वाहा ॥ ॥ यंधाप्रकाशय
ज्ञानेनि ॥ ॥ उं वज्रत्रास्यामाहा मात्रं वज्रगानां नमाम्

ॐ ॥ वरुण नमः धृष्ट वज्रा वरुणयूथं नमः ॥ वरुणदियामा
लादिया वरुणगंधी नमः ॥ ॥ वरुणि ॥ अकार मूय ॥
॥ थन ॥ वायूयस ॥ वरुणिय ॥ ॐ वरुणयूथं ॥ जा
य ॥ ॥ जराकवन ॥ स्या नवाय ॥ ॥ ॐ भ
गिय नमः स्वाहा ॥ ॐ अमृद्यदक्षि नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वपाय

नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वस्वक नमः निद्या नमः निन नमः स्वाहा
॥ ॐ गय हनि नमः स्वाहा ॥ ॐ सुनं गमाय नमः स्वाहा ॥
ॐ गगनगं जाय नमः स्वाहा ॥ ॐ हानकं नवनमः स्वाहा ॥
॥ ॐ अमृतपुराय नमः स्वाहा ॥ ॐ वन्द्यपुराय नमः स्वाहा
॥ ॐ जातिनि पुराय नमः स्वाहा ॥ ॐ वरुणराय नमः स्वाहा ॥

ॐ अक्रयमतिननमस्वाहा ॥ ॐ पुनिरानक्रनायनमस्वा
हा ॥ ॐ संमग्रादायनमस्वाहा ॥ ॥ यं वायुहा नयूका
नुति ॥ ॥ ॐ मंत्रियचमहा इकं सवायायऊहं नमः ॥
सर्वस्वकं नमो दानं गन्ध हस्ति सदानम्य ॥ सुलंगमख
ननं बह्म नकं नमामिहं ॥ अम नयुरामहा नं ऊं चद्र

पुनं नमामहं ॥ रुदवा रं लाकयार्त स्वका त्रिनिपु रं नमा
म्यहं ॥ वज्रगंत धर्मगार सदा क्रयं माननमनमं ॥ आयु
निरानक्रुडं च समसु रा दुकं नमनमं ॥ ॥ वत्रि ॥ अ
काम्य ॥ ॥ नं मु नं स ॥ वज्रथिय ॥ ॐ वक्रयक्रुडं
३ ॥ जाय ॥ ॐ वज्रां क्रुडं ॥ ॥ अशकवन ॥ खानवाय

॥ ॐ वज्रा क्रमाय नमस्वाहा ॥ ॐ वज्र वासाय नमस्वाहा ॥
ॐ वज्र ह्रीं नाय नमस्वाहा ॥ ॐ वज्र वासाय नमस्वाहा ॥ ॐ
॥ ववा प्रहात्रयूका नमि ॥ ॥ ॐ वज्रा क्रमं माहा क्राध
वज्र वासनमा म्याहं ॥ वज्र द्वागं माहा विल्लं ॥ वज्र वसनम
सदा ॥ ॥ वत्रि ॥ ज्जकार मूय ॥ ॥ यन ॥ मध्यम यिग

वज्र ॥ वज्र नथिय ॥ ॐ वज्र यक्रुहं ॥ जाय ॥ मूनं रमूनि
यस्वाहा ॥ ॥ ज्जक वन ॥ खानवाय ॥ ॥ ॐ वूडा यमा
कमूनि यस्वाहा ॥ ॐ ज्जक्रा त्याय नमस्वाहा ॥ ॐ तल्लमं र
वाय नमस्वाहा ॥ ज्जग नाताय नमस्वाहा ॥ ॐ ज्जमां द्यमि
धिय नमस्वाहा ॥ त्रावनं यनमस्वाहा ॥ मामकि यनमस्वा

हा ॥ ब्राह्मणाय नमः स्वाहा ॥ आर्याणामार्य नमः स्वाहा ॥
 यं वा प्रहायूता नमि ॥ ॥ उं रागुमालं वलं न निजि
 नं राव पुनमा म्हाः निवानयनमा नृद्धं त्वं वृद्धय नमा
 म्हा ॥ ॥ वत्रि ॥ अकार मूष ॥ ॥ रुमा वन ॥ ०
 ॐ ॥ दादस्य कुरु स्वाय ॥ ० ॥ यवस ॥ मध्यस ॥ महार्धस

य ॥
 दादस्य कुरु स्वाय ॥

वन ॥ अक्षवस ॥ ० ॥ रुवस ॥ निरवस ॥ खवस ॥ अक्षस ॥ ०
 दधितस ॥ मध्यस ॥ रत्न ॥ रुवस ॥ वृजगामा ॥ वृजद्वय ॥ खवस
 ॥ दास ॥ ० ॥ यक्षिमस ॥ मध्यस ॥ यमी ॥ रुवस ॥ सिखरमान
 ॥ सवस ॥ ध्रुवदह ॥ ० ॥ उग्रस ॥ मध्यस ॥ विश्ववस ॥ रुव
 स ॥ द्यं न ॥ सवस ॥ दं नृजग ॥ ० ॥ मास ॥ सिवस कति



कलस ॥ यल्लयान ॥ उहान ॥ विन ॥ मारसा ॥ शक्या
 नचिने ॥ युधि ॥ सज ॥ बन्द ॥ खत्र ॥ नाग ॥ वृथिवि ॥
 श्री ॥ द्वादशकनसन्व्यास ॥ ध्यानयाय ॥ पूर्ववैशाचन ॥ उं स
 तावसुधा ॥ सर्वधर्मा ॥ स्वतावसुधा ॥ नित्यवकात्रवत्रि
 नं वनातान्नमयकर ॥ स्याकोत्रजसुकधमादयानदकं सुक
 र्वचसुचिकवत्राक ॥ नद्वयत्रिहि विस्तारक कलि कायाव ॥

द्वादशकनसन्व्यास ॥

मन्दन ॥ उकात्रज नवसुचिकवत्र स्यानवत्रययक ॥ नित्य ॥ सु
 ग ॥ ब ॥ सूर्ययरी ससु नयववृषत्र नमकुनमदिगत्रनाविगुयि
 नविचिगुत्र द्वा सत्रनावत्र धनसागुत्रयसिन ॥ विन ॥ नक ॥ रुत्रि
 नचनसु व ॥ ससु रुद्र ॥ यथमास्या सवत्रवा धागासुडा धन ॥ स
 यत्रास्या ध्यानसुडा धन ॥ नित्यास्या रुद्रमात्रा चक्रधन ॥ वक्रथ
 स्यासत्रवायधन ॥ सगवर्ग रुगुद्र पूर्ववावन विशाख ॥ सहदि

नमस्तुत्वा कसंज्ञा नाकुसुमसुतसन्वमानियः, यूनताकायाचावमनादि
कंदत्वाकचसमयसत्त्व ॥ युवस्यमाहारागादविरुपवाधिवित्तव्यामि
नीः लूनविमर्यः चिह्नवसमयदेवताकाहानंदवनाय किंरुनं वित्त
यनता ॥ वजासकयुष्यमात्रानंयवसुगुं विविगुवामद्यंकासहि
नं वामसूनिनागहिन्वा ॥ ॥ उमर्धनथागतमहायागास्यनरुं ॥
ॐ निवक्रसस्यहिदयमंनेनप्रकक्षहिमंगुस्र ॥ ॥ उं वज्रयक्र

रुं ॥ ॐ नि सावकमिकमंकेनवनिष्कहिन्ने ॥ यूनवज्रथिय ॥
उं वज्रयक्रमं कुर्न वलिमतिनयुष्यगुयनिधिया ॥ ॥ युष्यन्यास
॥ उं वज्रधनुर्दुं ॥ १०८ ॥ यवापुहात्रयूजागुनि ॥ ॥ केतन
॥ उं सर्ववायिरुवागस्यसूना धियनं जिनं नुं धनुकमाहाराज
वैनाचननमानुक्त ॥ ॥ तनावत्रि ॥ सावकमिकमं वलिने
युक्त ॥ सताकृत ॥ यमकसायन ॥ यवमा ॐ नि गथया ना

गौविषययै न ॥ ००० नि वकुसुमार्धप्रावनम् ॥ १ ॥ पूर्वम् ॥ अक्ष
रं ॥ ॥ ॐ नमो ३ क्रांशस्य जगि नृ न्यादि ॥ निनयव सुचिक व
जाक न स्य विनः गङ्गा न्या यत्रि विस्वाक्रम विन्दु ईकान विज्ञ नि
नयव सुचिक वजसं र्दगं वजस्य क निष ॥ सुयै प्ररं दिरु कं य
क सुखं प्रवा गत्या निनयव सुचिक वजं धृत्वा रुशमूद्रा धर्त ॥
वामरु सु सुकानम सं गङ्गा विनं सु नयव वदुध मकु तमं दिनरु

गाविनयिनं वि चित्त रत्ना रुतना वत्र धर्तः वजसं अक्षरं वि
लाय ॥ सुहृदि जां दि वृत्ते ॥ ॥ अकमन ॥ याथा ॥ पृथ्व्यास
॥ स्वानवा ॥ ॥ ॐ वजसं ले ई ३ नना पृथ्व्यास ॥ यथाय नृति
० ॥ कै नन ॥ ॐ नमकं वजसं स्वयं सर्वं सख प्रसूक ॥ अग नाना
सय सु द्व अक्षा लायन मरुत्त ॥ ॥ नना वत्रि ॥ सर्वं पूर्व न ॥ २
रवि ॥ नना वल स रस्य ॥ ॥ ॐ नृति लादि ॥ वजा कि मत्र

लोकेत इति अस्माकं विस्वाकचमं लुं गं का रज वजा कन
नसं रं वजययं कं संह ॥ यितव न्म सूर्यप्ररा सूर्यववृध नलम
कनमं दित रजा वितनं विचिनु नलार नन सावत धनं ॥ दिरु रं
क मूर्य सयन वजा कन नम मध्यां गूर्या धत्वा वतदा शिनयं कुर्वन्वा
मम नानम सं गम्य पुञ्ज न वज नलारं वः नलम रं वः वित्ता व ॥ स्व
हृदि शानि ॥ ॥ याथादि ॥ यूर्य न्यास ॥ उं वज नल गं ॥ ३ वं वं

यनं गुरु नति ॥ ॥ किनन ॥ उं वज नल मदि विल सर्व रका धिय
यता ॥ धन धन पुञ्ज ना च नल सायनम दं ॥ ॥ वत्रि स्य वयुवन
३ ॥ वक्ति ॥ नना इति नार स्य ॥ उरु नित्यादि ॥ वजा किन पुमा
कन इति मयुत्रा वत्रि विस्वा धम वं वदु मं उरु दि का रज वजा
किन यमं नित कन ॥ अमिता रं वज ययं क संह ॥ वक्र यमं सूर्य प्र
मूलं यं ववृध नलम कनमं लुन रजा वित यितं विचिनु नलार

उना वत्र धर्मे दिहं जे न क मुख उग्रान वा म नत्र क ता वृस ग का
या सवाम धम ग ल्या व क य म ध ल्या क न धान मू ड ध म व र्ज विरा
व ॥ ख रु हि ता दि ॥ पा ॥ आ ॥ य ध्य न्या म ३ ॥ ॥ उं ध म्म व र्ज
१०८ ॥ य ध्य ॥ ना म्या ॥ य ॥ वा ॥ इ न्ति ॥ ॥ के न न ॥ उं ध म्म ना
जा ॥ मि ना रा य ॥ का नि सू र्ज पु रा मि न ॥ सू र्वा व नि यु नि था य व र्ज
ध म्म न म न्ते न ॥ ॥ व त्रि ॥ य व र्ज ॥ ॥ न ना ॥ भा द्य सि धि ॥

उं उ न्ति ल्या दि ॥ न इ व नि म न्दा य त्रि वि स्था कृ ष्ठ व न्द मं लु
अ ॥ का न र्ज वि स्त व र्ज मं ज्ञा न ॥ अ भा द्य सि धि व र्ज य य क नि य लु
या म व र्ज सूर्य पु री म् न र्थ च वृ ध र त्म म कृ ष्ठ म दि न र्ज ना वि न यि
न वि चि न र त्ना रा त्र ना व त्र ध र ॥ दि हं जे न क मुख स र्वा न वि स्त व र्ज
म धम ग ल्या ध ल्या रा य दाना लि न य न वाम म्म नान म्म स ग म्मा य
य क म्म व र्ज वि रा व ॥ ख रु हि ता दि ॥ पा ॥ आ ॥ या या दि य ध्य

न्यास ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ईकर्मवज्रम् ॥ १०८ ॥ यं वा युः पूजायुति ॥

॥ ईकर्मवज्रमहावज्रसर्वकर्मयुसाधकः ॥ सर्वसिद्धियुक्तानाथः ॥
॥ मायसिद्धिनामा मुक्तः ॥ ॥ वज्रि ॥ स्वयं पूज्यवत् ॥ ॥ दक्षिण
॥ वज्रं वज्रं वज्रं ॥ नना वज्रं त्रास्याया ॥ ॥ एतन्निर्वनइयत्रिन
विस्वाकृ म् चन्द्रविभ्राह्मकात्रज वज्रद्वयसंस्तुतां मलययक निष
र्मासूर्ययरात्रि मकृदिनि विचित्रनन्ना रात्रना वज्रधत्रिद्विरु

॥ ईकर्मवज्रगवा म् दया रक्षा रक्षां वज्रद्वयविभ्रतां वज्रनास्या
विराव्य ॥ सहदि ॥ ॥ या ॥ पूर्यन्यास ॥ ३ स्नानवा ॥ ॥ ई वज्रना
स्यम् ॥ १०८ ॥ यं ॥ त्रास्यायुति ॥ ॥ ई वज्रनास्य महा त्रास्य स
वैत्रिन्नायदसकिः ॥ सर्वतावैष्वर्वा त्रास्य ॥ त्रास्या वज्रनममुक्तः ॥
वज्रि ॥ स्वयं पूज्यवत् ॥ ॥ य ॥ यक्षिम् ॥ वज्र ॥ ॥ भूयः ॥
एतन्निर्वनयत्रिनन्त विस्वाकृ चन्द्रविभ्राह्मकात्रज भूयकनक

रुतां सत्त्वययक निषना सिनवर्कसूर्ययरां प्रत्नमकृटिनिवि
विनत्रत्नारात्रना वत्रधत्रिदिरुक्तं कमसंरुतात्या धूपककु
ध्रिनिनवजधूपां विलावा ॥ स्वहृदि ॥ ॥ या ॥ पूयंन्यास ॥ स्थान
वाय ॥ ॐ वज्रधूपार्ह ॥ १०६ ॥ व ॥ पूजाकुली ॥ ॥ ॐ वज्रधूयाम
हाधूयासवत्राकेयुधूयिताः सवसुगन्धयुक्तागधूयवज्ञानसाम्य
हं ॥ वत्रि ॥ स्वययवत् ॥ क ॥ पूववाम वजाकृत् ॥ ॥ उरुति

वंगइयत्रिविस्वाकूचन्दविभ्रजकात्रजांकमसंरुतंसत्त्वययक
निषना सिनवर्कसूर्ययरां प्रत्नमकृटिनिवि विनत्रत्नारात्र
ध्रिनिनवजधूपां विलावा ॥ स्वहृदि ॥ ॥ या ॥ पूयंन्यास ॥ ॥ ॐ वजाकृत्सज ॥
१०६ ॥ ग्रास्या ॥ गुति ॥ ॥ ॐ वजाकृत्समाविर्दयुमास्वमदक
॥ सवसुगन्धयुक्तागधूयवज्ञानसाम्य ॥ ॥ वत्रि ॥ स्वययवत् ॥

८ ॥ दक्षिण ॥ वरुणास ॥ ॥ उं वरुणास ॥ न इयत्रिविस्वाकु ॥
चन्द्रकान्तवरासमंज्ञानं ॥ सन्वयकर्मणि नं ॥ यिनवल्गुसु
र्ययुक्तं नलमकु निनिविचिन नला राना स्वतधरं ॥ द्विरुयने
कमूयंरुजाया वासध रं वरुणासविता वा ॥ स्वहृदि ॥ वा ॥ पूर्व
न्यास ॥ लयू ॥ ॥ उं वरुणासहं ॥ १०८ ॥ यं ॥ युजा नृति ॥
उं वरुणासमहा वासं रानयानयमानकं ॥ सुवसुतुसदावद्विने

वासं नमामाहं ॥ ॥ वरि ॥ युव नतु ॥ ७ ॥ दक्षिण ॥ वरुणास ॥
॥ उं वरुणास ॥ न इयत्रिविस्वाकु चन्द्रविम्बवका नतुसि वरा
निघनं सन्वयकर्मणि नं ॥ नकु वल्गुसूर्ययुक्तं नलमकु निन
विचिन नला राना वतधरं ॥ द्विरुक्तु कमूयं कता या वरुणि
स्वता धरं वरुणासविता वा ॥ स्वहृदि ॥ ॥ वा ॥ पूर्व न्यास ॥
स्नानवाय ॥ ॥ उं वरुणासहं ॥ १०८ ॥ यु ॥ नाया नृति ॥

ॐ वज्र ह्रीं कलि ह्रीं नागमा नातर्क्युः स्वस्व कुवर्तं ह्रीं
ह्रीं नमः ॥ १० ॥ ॐ गुणः चक्र ॥ ॐ कृत्तिर्वः नदयत्रि विस्वा
कचन्द्र विम्बः ॥ काका नगवजा कितः चक्रा संलूनं सस्वययकः
निर्लु सूर्य पुरं नल्लमकुनिन विविन नल्लो न नल्लो निवल्ल
॥ ॥ दिग्न कसूर्य वजा वस विराच ॥ स्वहृदि ॥ या ॥ नृद्यं ॥ य
स्थानवाय ॥ ॥ ॐ वजां वसहा ॥ १०६ ॥ यः ॥ यूनः स्मादुनि ॥

॥ ॐ वजा वस माहा वस्यः सर्वस धर्म प्रवसाकः ॥ ॥ ॐ साजान
क विन्त वजा वस्य नमः ॥ ॥ वत्रिः सर्व पूर्व ॥
॥ ॐ गुल वज्रक ॥ ॥ कृत्तिर्वः नदयत्रि विस्वा कचन्द्र विम्बः
काका नगवजा कदं नृग निष्ठा नै सस्वययक मिषल्ल क सुव
नृ सूर्य पुरं नल्लमकुनिन विविन नल्लो न नल्लो निवल्ल
॥ ॥ दिग्न कसूर्य वजा वस विराच ॥ स्वहृदि ॥ या ॥ नृद्यं ॥ य
स्थानवाय ॥ ॥ ॐ वजां वसहा ॥ १०६ ॥ यः ॥ यूनः स्मादुनि ॥

नं वरुयं कृ विता वा ॥ स्त्र हृदि ॥ वरु स ३ संयून ॥ स्नान वाय ॥
॥ ॐ वरुयं कृ हं ॥ १०७ ॥ यः युजा नृति ॥ ॥ ॐ वरुय
कृ महायं कृ सर्वयं कृ युधानका सर्व वि विद्यु गनं धर्मं यं कृ व
जनमानुक्त ॥ ॥ वरि स्या ययुव ॥ १२ ॥ ॥ ॐ नृगया ॥ यू
व ॥ ॥ ॐ नृति नृ वं ॥ त इय त्रिगुण य इ नि दं वि स्या कृ व नृ वि
स्य ॐ का नृगं स रं गृ लं त्रि ना स न रं या त व रं न त म कृ ति न वि वि त

नृत्ता व न धर्मा ॥ दिरु कृ क मू र्ध स व न व र क टि कृ वा म क म न व र
धर्मा त्री देव ना रं वि ता वा ॥ स्त्र हृदि ॥ ॥ या ॥ यू व न्या म ॥ स्नान वाय ॥
॥ ॐ आ रं नृ ना य न म स्त्रा हा ॥ ॥ युजा नृति ॥ ॥ ॐ देव ना रं
स रं ना यू वं दिरु यु ति मि न न मा मि स न रं वि त रं व रं ना क ल कृ क
॥ वरि स्या ययुव ॥ ॥ ० ॥ मि व स क नि क ल स या न ॥
व र नृ ति य ॥ ॥ ॐ वरुयं कृ हं ॥ ॐ वरुयं कृ मा हा ल य ॥

सबुजकृ॥ शिवसकतिविरांघ्र॥ ॥ याथादिपूर्व्यान्वास॥

॥ ॐ वृजलकृ॥ शिवसकतिनमस्वाहा॥ ॥ पूजा

कृति॥ ० ॥ ॐ नमस्तुभ्यं सर्वस्य तितिक्षकं ॥ ॐ नमस्तुभ्यं सर्वस्य तितिक्षकं ॥ ॐ नमस्तुभ्यं सर्वस्य तितिक्षकं ॥

सर्वस्य तितिक्षकं ॥ शिवसकतिनमः ॥ ॥ वरि ॥ अकारम

य ॥ ० ॥ मात्रसा॥ ना कयात्तं कस्यात्तं ॥ धूय ॥ जाय ॥

पूजाकृति ॥ ॥ कदाचिमात्रसा ॥ दसकाधपूजा ॥

धूय ॥ जाय ॥ ॥ पूर्व्यान्वास ॥ य॥ पूजाकृति ॥ ० ॥

जवस ॥	रजवस ॥	दंगु मधस ॥	कुस ॥	खवस ॥	धवस ॥	क
इन्द्रदेव	सिंदेव ॥	आयन ॥	देव	काहे देव ॥	यता ॥	थान ॥
विजकुस ॥	वैनाय ॥	मह	संवत ॥	आग	आविनि ॥	धुतिथयनधू
कात्र ॥	गवमात्राग ॥	स्वकन	म ॥	वृग ॥	चि	नडाव ॥
मन ॥	झसकन ॥	सि	मून	नवाहात्र ॥	प्रातद्य ॥	यैव गवेस्वधन ॥
					याचिनिस्वर्नयाकथ ॥	सुगरीदिज्ञावक ॥

थन ॥ गुरुमंलुत्र ॥ विस्वजन ॥ सिंधूत्रियूजा ॥ ग्रहस्य ॥ गिरु
 मावि ॥ ज्ञायधूनडाव ॥ थायनायाकयूजाधूनडाव ॥ थन ॥ द
 वयूजा ॥ ज्ञाय ॥ धूय ॥ ० ॥ याद्यादिवृष्यन्यास ॥ मधस ॥
 उँडाकिनियहंरुठ ॥ नमहंरुठ ॥ खंदत्राहायहंरुठ ॥ नूयि
 नियहंरुठ ॥ वृगकत्रातकहंरुठ ॥ समयकतूहंरुठ ॥ विम

मयकत्रागकईरुठ ॥ समयविसमयकत्रागकईरुठ ॥ त्यादि ॥
० ॥ ॐ आर्यावत्रा कस्वराय स्वाहा ॥ आर्यवैत्रा चनाय स्वाहा ॥
अक्षायाय स्वाहा ॥ अक्षरं च वाय स्वाहा ॥ अमिता राय स्वाहा
॥ अमृद्यसिद्धीय स्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तं वृक्षा नृनि ॥ ॐ द्वि
कात्राज्ञानार्थ ॥ अमाद्ययासं नामाना ॥ लोकनाथं नमामि ॥

ॐ नमः ॥ आचकर्मवराय ॥ सर्वरुद्रा नमो देह ॥ अगदन्व
प्रसादक ॥ चित्तमन्त्रि विरुत ॥ आसन्वर्तनमा नृन
॥ ॥ अक्षर ॥ देवुनिदयान ॥ स्वानवाय ॥ ॐ आदिन्याय
स्वाहा ॥ स्वमाय स्वाहा ॥ अंगराय स्वाहा ॥ वृक्षाय स्वाहा ॥ वृ
हद्युतिय स्वाहा ॥ सुक्रनाय स्वाहा ॥ सनिचराय स्वाहा ॥

त्राहवस्वाहा ॥ शान्तिकृत्यस्वाहा ॥ कर्मनरु नरं स्वा
हा ॥ ॥ शिवसं ॥ इन्द्रायान् ॥ स्नानवाय ॥ ॐ नमो
योगमन्त्रायस्वाहा ॥ ग्राह्यान्ताकिनियस्वाहा ॥ ग्राह्य
क्रात्यायस्वायस्वाहा ॥ हवज्जाकिनियस्वाहा ॥ कृत्र्या
त्राकिनियस्वाहा ॥ यूर्वनात्राकिनियस्वाहा ॥ हव

ताकिनियस्वाहा ॥ त्यादि ॥ ॥ यथायुक्तप्रयुक्तानुति ॥
० ॥ शिवसं ॥ क्राह्यान्ता ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ हवज्जा
त्रिनमस्वाहा ॥ नरुवन्दुनैत्रवायनमस्वाहा ॥ वक्रमात्रि
यिनितनमस्वाहा ॥ वक्रवन्दनमस्वाहा ॥ मय्यात्रनागत्रा
यनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तप्रयुक्तानुति ॥ ॥ शिवसं ॥

गंनं स्यात् ॥ खानवाय ॥ ॥ ॐ गंतं स्वत्राय स्वाहा ॥
गनाधियुतं यस्वाहा ॥ गनयुति युक्ति ता यस्वाहा ॥ त्यादि ॥
॥ यवायुहात्रयूता नृति ॥ ॥ यनः कंतन ॥ ॐ सु
रुखं मामहि युतं वृषदं वगुरु सिग्ग ॥ स निचत्र ग्रहा
रु ॥ कदुरुर्मनमादुतं ॥ ॥ ॐ नमो ग्रायागमधियुसस्वमा

वक ॥ नमो नृसुखासु ॥ कशावक ॥ नमो नृसुखानवमाहा
कुदक ॥ नमो नृने ॥ यागमम्वर्त ॥ ॥ ॐ कामात्रिकुना ॥ व
कात्रिकुसंज्ञातं ॥ स्वायूषविद्वानं व ॥ नमो नृमयूजवापुनि ॥
॥ ॐ नमो ग्राविद्युस्वराय ॥ हवूयत्रमदं व ॥ काकुसिधिवि
नायक ॥ त्यादि ॥ ॥ समय ॥ थ ॥ मम ॥ र्यवमा ॥ ० ॥

थन ॥ कृष्णयूगा ॥ धूय ॥ ज्ञाय ॥ खानवाय ॥ ॥ उंथागा
मन्त्राय स्वाहा ॥ हानताकि निय स्वाहा ॥ त्यादि ॥ ॥ उंका
मात्रिममा स्वाहा ॥ ॥ अथ या विवन ॥ उंताकि निय हूं हूं ॥
॥ यं वायुनात्र यूगा नृति ॥ उंथागा मन्त्राय ॥ त्यादि ॥
उंका मात्री लकवन ॥ त्यादि ॥ ॥ थन ॥ चक्रयूगा ॥ ०

थन ॥ वत्रिविय ॥ खाननन ॥ गुरुयूगा ॥ दक्रका ॥ दग्गति
समय ॥ विस्वजन ॥ कंसारिकक ॥ सिंधर ॥ मानि ॥ आग
ननस्य ॥ गुरुयतिनिन ॥ सकलति चक धूनडाव ॥
शङ्कुव ॥ आगननस्य ॥ हिरंक ॥ धूनडाव ॥ समचक्र ॥
धूनडाव ॥ विस्वजनयाय ॥ धूनडाव ॥ गनुरक ॥ ०

युनि ॥ यचिनिस्वनयाविधि ॥ कृष्णयूजाविय ॥ स्वनक
कृव ॥ थनकृकृव ॥ मान ॥ ॥
॥ ० ॥ थन ॥ वृक्षाकलसयान ॥ ध्रुव ॥ ज्ञाव ॥ ध्यान ॥
ॐ वृक्षापिनवना ॥ हंसवाहनसंकिर्त ॥ दक्षिणार्धकर्म
सूतच ॥ वायुकर्मद्रुधर्ल ॥ ॥ शक ॥ खन ॥ पाशादि ॥

स्वानवाय ॥ ॥ ॐ वृक्षायनिनमस्वाहा ॥ ॐ वृक्षनिलय
नमस्वाहा ॥ ॐ वृक्षाकायनमस्वाहा ॥ ॐ विष्णुनयनम
स्वाहा ॥ ॥ यचिायुजायूजानुनि ॥ ॥ ॐ वृक्षनिपूष
सगमहा ॥ चक्रवादासुयगम ॥ कर्मलुल्लसूतच ॥ हंसानु
धनमल्लक ॥ ॥ वृक्षिदय ॥ ॥ थन ॥ सूतकलसया

न ॥ धूप ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कु
लिंगमस्तनमासन ॥ निष्ठावत्रारमसूदा ॥ ध्यायमानकनवल्लय
॥ ॥ श्राकवन ॥ याद्यादि ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यात्रियच्छिकायनमस्वाहा ॥ ॐ देवाकनारायणाय नमस्वाहा ॥ ०

यन्त्राय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥
स्तनमासन ॥ कुवत्रयइनय ॥ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
० ॥ धन ॥ चन्द्रकलमयान ॥ धूप ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥
चन्द्रमायि नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वर्कवल्लश्रययदा ॥ ॥ श्राकवन ॥ याद्यादि ॥ स्नानवाय ॥

ॐ चन्द्रमायनमस्वाहा ॥ ॐ चन्द्रनियनमस्वाहा ॥ ॐ स्यन
हंसायनमस्वाहा ॥ ॐ ॐॐ द्रव्यालियक्रिकायनमस्वाहा ॥ ॐ नि
साचक्रदत्तायनमस्वाहा ॥ ॥ यंचायुह्ययूशान्ति ॥ ॥
ॐ संस्कृतलुम्कारा ॥ हंसायनमस्वाहा ॥ ॐ कुरुद्रकलव
लंसावित्तिसानार्थनमामिहं ॥ ० ॥ अथन ॥ यिक्किविकल

स्यान ॥ धय ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ यिक्किविविगवना
शा ॥ यम्मसंस्तिनमानं ॥ दहिनकनरुधित्वा ॥ वाम्यश्रुमिगु
याजक ॥ ॥ अकवन ॥ याथादि ॥ स्यानवाय ॥ ॥ ॐ यि
थिवायनमस्वाहा ॥ ॐ अकमात्रियनमस्वाहा ॥ ॐ रुयाल
कायनमस्वाहा ॥ ॐ रुवनायनमस्वाहा ॥ ॥ यंचायुह्ययूशान्ति

यूगादिति । ॥ ॐ विष्णुविक्रमधर्षव ॥ अमिगसंज्ञनं ॥ स
वागकनकवनाहा ॥ यमामननमकुर्ता ॥ ० ॥ थन ॥ अ
सूत्रयाग ॥ ॥ धूप ॥ ज्ञाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ वेमचिगामत्रक
नाहा ॥ लथारियत्रिसंथागा ॥ दहिनवामरुनन ॥ स्वगहन
कध्मात्रिन ॥ ॥ अकधन ॥ वाद्यादि ॥ स्नानवाय ॥ ॥

ॐ अमूत्रायनमस्वाहा ॥ ॐ दंखवनियनमस्वाहा ॥ ॐ कृतालथ
यनमस्वाहा ॥ ॐ दनं ऊडवाययनमस्वाहा ॥ ॐ दानवदगा
यनमस्वाहा ॥ ॥ यथाप्रहात्रयूगादिति ॥ ॥ ॐ कृतास
नारुलसख ॥ स्वगहनकध्मात्रिन ॥ स्वामवनाममहाकाय ॥
व्यामचिगायननमा ॥ ० ॥ थन ॥ स्वयनागकलसयाग ॥

धूय ॥ ज्ञाय ॥ ध्यान ॥ ॥ उं श्यवनागमदुखालारा ॥ विष
वाधियूनकनारा ॥ कृताञ्जलिध्याययममासनमंथिन ॥
० ॥ आकषन ॥ याद्यादि ॥ खानवाय ॥ ॥ उं श्यवनागमन
मस्वाहा ॥ उं नागियनमस्वाहा ॥ उं यस्मायनमस्वाहा ॥ उं वि
षवलयात्रित्रायनमस्वाहा ॥ उं श्यवादिर्महात्रायनमस्वाहा

॥ ॥ वंचायुललयकानुनि ॥ ॥ उं नागनागादुखवर्न
॥ कृताञ्जलिकनकधूर्त ॥ यमायत्रिममासिन ॥ श्यवनागमन
मदुर्क ॥ ॥ धन ॥ वृद्धिदय ॥ आरुनिविष ॥ ॥ उं
जस्मिगात्वमाहाविल ॥ शिवासर्वसंयद ॥ शिवंथसिद्धिसंरा
र्त्त ॥ सर्वस्वस्तिकलिकुनि ॥ जज्ञमानस्य ॥ ०० न्दादिनाकवा